स्नातक प्रथमखंड, हिन्दी प्रतिष्ठा
उपन्यास के तत्व का शोषांश
डॉ० सतीश चन्द्र पाठक
एस०एम० कॉलेज, जहानाबाद

पात्र या चरित्रचित्रण

उपन्यास की परिभाषा के क्रम में यह बतलाया गया कि प्रेमचन्द उपन्यास को मानव चरित का चित्र मात्र मानते थे तथा यह भी कि मानव चरित्र पर प्रकाश डालना ही उपन्यास का मूल उद्देश्य है। तात्पर्य यह कि पात्र के अभाव में उपन्यास की परिकल्पना ही संभव नहीं है। सच तो यह है कि पात्रों से ही कथानक का निर्माण होता है। क्योंकि कथानक अपने आप में कुछ है नहीं, वह तो पात्रों की गतिविधियों या पात्रों के साथ घटित होने वाली घटनाओं के द्वारा ही निर्मित होता है। अतः स्पष्ट है कि कथानक का मूल आश्रय पात्र ही हैं। पात्र नहीं तो कथानक नहीं और कथानक नहीं तो फिर उपन्यास का अस्तित्व ही नहीं हो सकता। अतः स्पष्ट है कि उपन्यास के अन्य समस्त तत्वों का आधार यह तत्व अर्थात् पात्र ही है। इसलिए

मैं चरित्र-चित्रण या पात्र को उपन्यास का प्राण तत्व मानता हूँ। प्राणतत्व इसलिए कि कथानक का आधार पात्र है। संवाद का आधार भी पात्र ही है। वैसे ही भाषा-शैली भी पात्र के आधार पर ही रहता है। अतः पात्र उपन्यास का प्राण तत्व है।

पात्रों का चयन लेखक द्वारा इसी समाज से किया जाता है। अतः समाज का सम्यक स्वरूप इसमें प्रतिबिंबित होता है। उपन्यास में उपलब्ध पात्रों की प्रायः दो श्रेणियाँ होती हैं- (i) प्रतिनिधि पात्र और (ii) व्यक्ति पात्र

प्रतिनिधि पात्र एक बड़े समुदाय का प्रतिनिधित्व करता हुआ प्रतीत होता है। यानी किस वर्ग या समुदाय विशेष का वह प्रतिनिधि होता है उसके चरित्र में उस वर्ग की अधिकांश विशेषताएं प्रतिबिंबित होती हैं - ऐसे पात्रों को प्रतिनिधि पात्र या वर्गगत पात्र कहा जाता है। जैसे गोदान का होरी भारतीय किसान का प्रतिनिधि पात्र है। भारतीय किसान की विशेषताएं, असमर्थताएं, चरित्रगत कमजोरियां, और खूबियाँ - होरी के चरित्र में मूर्तिमान हैं। इसीलिए होरी एक वर्गगत या प्रतिनिधि पात्र का श्रेष्ठ उदाहरण है।

(ii) व्यक्ति पात्र - ऐसे पात्रों की अपनी विशेषता होती है। ये किसी भी वर्ग का प्रतिनिधित्व नहीं करते वरन केवल अपना प्रतिनिधि होते हैं। वे दूसरे से सर्वथा भिन्न विशेषताओं वाले होते हैं। किन स्थितियों में इनकी कैसी प्रतिक्रिया होगी इसका अनुमान सहज ही नहीं लगाया जा सकता। इनके चरित्र में एक विशिष्टता होती है जो उन्हें समुदाय से अलग कर देती है। वे समाज में रहकर भी उससे भिन्न होते हैं।

इनके सोचने और प्रतिक्रिया का तरीका सर्वथा भिन्न होता है
जहाँ पर भी ऐसी विशिष्टता चरित्र में मिले उसे व्यक्ति पात्र
व्यक्ति चरित्र कहा जाएगा जैसे सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन
अज्ञेय के उपन्यास शेखर एक जीवनी का नायक - शेखर एक
व्यक्तिपात्र है। पूरा उपन्यास पढ़ जाने के बाद भी शेखर की विभि
स्थितियों में उसकी प्रतिक्रिया की दिशा का अनुमान लगाना कठि
उसका चिंतन, उसका व्यवहार विचित्र है या कहें सामान्य नहीं
वह अपना प्रतिमान स्वयं है उसकी किसी से भी तुलना नहीं हो सकती
अतः वह व्यक्ति पात्र है। इसी प्रकार अन्य स्थूल वर्गीकरण
को देखें तो - आदर्श पात्र, दुष्ट या खलपात्र, स्त्रीपात्र, पुरुषपात्र
इत्यादि वर्गीकरण भी संभव है। किन्तु सच पूछा जाए तो समाज में
जितने प्रकार के लोग हैं पात्र के प्रकार भी उतने ही हो सकते हैं
इस प्रकार हम देखते हैं कि पात्र उपन्यास का मुख्य तत्व है जिस
अभाव में उपन्यास की कल्पना असंभव है।